सब दुख में करैं पुकार हाय मोरी मैया री ॥

गर्भवास में रक्षा कीनी जन्मत ही कुच मुख में दीनी ।
क्षण क्षण में सुध हमरी लीनी अवगुण सभी बिसार
पार करो नय्या री ॥

पूत कपूत भले हो जावे मात कुमात कभी न कहावे ।
बहुत दया हिरदय में आवे जब कहे पुत्र ढिंग जाय
मार मोहे मय्या री ॥

शक्ति रूप होय सबमें व्यापक ब्रह्मा विष्णु इन्द्र करि थापक ।
जपे निरन्तर तुमको जापक निर्मल ज्योति अपार
लखे न लखय्या री ॥

तात गुरू भ्राता अरु राजा दोष क्षमा करतें सब लाजा ।
क्षमा स्वरूपणी करें सब काजा मात करे उद्धार
वही रखवय्या री ॥

भक्तों में विष्णु भक्ति हो शिव के संग आदि शक्ति हो ।
बन्धन से देती मुक्ति हो मन में यही विचार
जाउं बलय्या री ॥